इकाई 9 पारसी और फसली कैलेण्डर

इकाई की रूपरेखा

9.0 अधिगम प्रतिफल

9.1 प्रस्तावना

9.2 फारसी पंचांग

9.3 फसली पंचांग

9.4 पारसी कैलेण्डर में महीनों और दिनों का नामकरण

9.5 अभ्यास/बोध प्रश्न

9.6 सारांश

9.7 शब्दावली

9.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

9.0 अधिगम प्रतिफल

विश्व के कैलेण्डरों के अध्ययन के दौरान हमने पूर्व में कैलेण्डर के इतिहास के विकास के बारे में अध्ययन किया। इस इकाई में हम आरियाना जिसका वर्तमान में नाम ईरान है, में प्रचलित कालगणना के कुछ मानकों के रूप में फारसी और फसली कैलेण्डर का अध्ययन करेंगे। इसमें यह भी अध्ययन करेंगे कि प्राचीन आरियाना के लोग कैसे और किस उद्देश्य से कैलेण्डर गणना करते थे। आरियान के लोग सूर्य और अग्नि के उपासक थे, इसलिए उनकी अवधारणाएं भी उसी पर आधारित होनी चाहिए। अत:इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- फारसी व फसली कैलेण्डर की अवधारणा को जानने में सक्षम होंगे।
- इनके माध्यम से भारतीय तकनीक, विज्ञान और गणित के व्यापक क्षेत्र को जानकर दोनों में अन्तर कर सकेंगे।
- मध्य एशिया और अरब के मध्य सेतु के रूप ईरान या फारस को समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

फारसी कैलेण्डर का नाम फारस देश के नाम पर पड़ा है। हमें ध्यान रहना चाहिए कि फारस नाम पारसी मत के अनुयायियों के नाम पर पड़ा है। पारसी का ही कालांतर में फारसी हो गया। वर्तमान ईरान ही मध्यकाल का फारस या पारस देश था। परंतु उससे पहले इसका नाम आर्यान या आरियाना था। ओट्टोमन साम्राज्य के टूटने के बाद ईरानी राज्य की पुनर्रचना हुई तो वहाँ के लोगों ने पहले उसका नाम प्राचीनता के आधार पर आर्यान ही रखना चाहा था। परंतु फिर इस्लामिक कट्टरवादियों के कारण ईरान नाम स्वीकार किया गया। परंतु ईरान नाम से उसकी अपनी परंपरा प्रकट नहीं होती। फारस नाम भी उनकी परंपरा को स्पष्ट करता था।

प्राचीन आरियाना पूर्व में प्रकृति पूजक और सूर्य के उपासक लोग रहते थे। इनके प्रमुख दार्शनिक या कहें संत जरथ्रूस्त (अंग्रेजों ने इसे जोरास्टर कहा जाता है) थे। जगथ्रुस्त ने जो पुस्तक लिखी उसे जेंदावेस्ता कहते हैं। वस्तुतः जेंदावेस्ता को ध्यान से पढ़ें तो पता चलेगा कि वह कोई मौलिक पुस्तक नहीं है। वह ऋग्वेद का ही पुनर्प्रस्तुतिकरण मात्र है। ऋग्वेद को आधार बना कर अपना मत विकसित करने वाले पारसी स्वाभाविक रूप से अग्निपूजक थे। पारसी भाषा भी लगभग संस्कृत जैसी ही है और उसके अनेक शब्द थोड़े परिवर्तन के साथ संस्कृत शब्द ही हैं। जैसे संस्कृत का 'असुर' शब्द पारसी में 'अहुर' बन गया। ऐसे ही उच्चारण में परिवर्तन के साथ संस्कृत के शब्द बड़ी संख्या में पारसी में प्राप्त होते हैं।

पारसियों ने अपने धार्मिक और कर्मकाण्डीय उद्देश्यों के लिए पारंपरिक कैलेण्डर में परिर्वतन कर तीन अलग-अलग संस्करण तैयार किये। अब इनका स्वरूप मध्ययुगीन ईरानी कैलेंडर जैसा हो चुका है और ये बेबीलोनियन कैलेंडर पर आधारित हैं। ये कैलेण्डर वर्तमान में अकेमेनिड साम्राज्य के वैधानिक उत्तराधिकारी हैं। 1006 ईस्वी में एक पारंपरिक गणना विधि से तैयार किया गया अकेमेनिड कैलेण्डरकदीमी (प्राचीन) कहलाता है।

फसली कैलेण्डर अपने नाम के अनुरूप ही फसल यानी कृषि की उपज की कालगणना है। फसल से संबंधित होने के कारण ही इसे हम फसली कैलेण्डर कहते हैं और इसी कारण यह कृषि कैलेण्डर भी कहलाता है। फसली कैलेण्डर का विकास पारसियों द्वारा ही हुआ और यह प्रचलित भी वर्तमान इरान में ही है। इसलिए इन दोनों कैलेण्डरों का साथ में अध्ययन करना लाभकारी है।

9.2 पारसी कैलेण्डर

आज से ढाई हजार यानी 2500 वर्ष पूर्व सेवर्तमान इरान में कैलेंडर का इतिहास प्रारंभ होता है। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में एकेमेनिड साम्राज्य में जरथ्रुस्त्र के अनुयायियों ने कैलेण्डर का विकास किया था। इसे ही सबसे पुराना पारसी कैलेण्डर 'अवेस्तान कैलेण्डर' स्वीकार किया गया है। जेंदा अवेस्ता के नाम पर इसे अवेस्तान कैलेण्डर कहा गया है। इसके महीने के सातवें और अन्य दिनों को अहुरा मज्दा से संबंधित करने में बेबीलोनियन कैलेण्डर को ही आधार बनाया गया है।

उल्लेखनीय है कि बेबिलोन या सुमेर तो भारत के एकदम निकटवर्ती क्षेत्र हैं। वस्तुतः बेबिलोन, सुमेर आदि नाम आधुनिक यूरोपीय इतिहासकारों द्वारा दिये गए नाम हैं। यदि हम इनके मूल स्रोतों की पड़ताल करेंगे तो हमें ऐसे भरपूर प्रमाण प्राप्त होंगे जो भारत से इनके संबंधों को स्थापित करेंगे। भारतीय ग्रंथों में इनके प्राचीन नाम भी हमें प्राप्त होंगे। भारतीय कालगणना की ही भांतिबेबीलोनियन कैलेण्डर भी चांद्र-सौर गणना पर आधारित था। इसमें यह लगभग हर छह साल में एक बार एक अंतराल महीने का उपयोग होता था, यह बिल्कुल भारतीय अधिक मास की गणना के समान था।

इसी प्रकार एकेनेमिड शासक कैंबिस ने 525 ईसा पूर्व में मिस्र विजय के अवसर पर एक कैलेण्डर तैयार करवाया। यह एक 365 दिन वाला कैलेण्डर मूल रूप से 360 दिन वाले पारसी कैलेण्डर का ही परिष्कृत रूप था। यूनान के सेल्युसिड राजवंश द्वारा 330 ईसा पूर्व में फारस विजय के बाद यहां पर यूनानी कालगणना का प्रभाव दिखने लगा। इस गणना का विरोध जनता

में रहा और पारम्परिक एकेनेमिड कैलेण्डर ही उपयोग में आता रहा लेकिन शासन सम्बंधी क्रियाकलापों के लिए सेल्युसिड या यूनानी कैलेण्डर का उपयोग होने लगा।

224 ईस्वी में जब सासानिदों ने बेबिलोनियन कैलेण्डर के स्थान पर फिर से 'अवेस्तान कैलेण्डर' का अपनाया तो नवरोज उत्सव एक अक्टूबर तक चला गया था। यह सब सम्राट के राज्याभिषेक के बाद हुआ। अब एपेजमोनाई (नौवें महीने का उत्सव) आठ महीने की देरी से और गहनबार करीब 10 माह की देरी से आने लगा। इसके लिए महीनों को पुनः समायोजन किया गया, ताकि इन्हें ऋतुओं के अनुरूप रखा जा सके। इससे भ्रम की स्थिति पैदा हो गई, क्योंकि नया साल अब पहले की तुलना में पांच दिन पहले पड़ गयाऔर इसलिए कुछ लोग पुरानी तारीख का पालन करते रहे। 46 साल (226-272 ईस्वी) के बाद 19 सितंबर कोएक और कैलेण्डर सुधार सम्राट अर्दाशिर के पौत्र सम्राट होर्मजद प्रथम ने करवाया। इससे सभी भ्रम की स्थितियां समाप्त हुई और कैलेण्डर अपने सही स्वरूप में आ गया। फिर भी पांच दिन की विसंगति समाप्त नहीं हो सकी। होर्माजद का सुधार के कारण नवरोज उत्सव महीने के पहले और छठे दिन को अलग-अलग अवसरों के रूप में मनाया जाने लगा। 10वीं शताब्दी के आस-पास, नवरोज महान सम्राट जमशेद के राज्यभिषेक के समय जोड़ा गया। वर्तमान में इसे पारसी सम्राट के जन्मदिन या खोरदाद वर्ष के प्रतीक के रूप में माना जाता है।

कदीमी कैलेंडर

कदीमी या 'प्राचीन'कैलेण्डर 1006 इस्वी के बाद से उपयोग में आने वाला पारंपरिक कैलेण्डर है। 1006 इस्वी में, फ्रावर्डिन महीना (पहला महीना) की पहली तारीख उत्तरी वांसत विषुव पर आ गई और सही स्थिति में वापस आ गया इसलिए धार्मिक उत्सवों को उनके पारंपरिक महीनों में वापस कर दिया गया। नवरोज एक बार पुनः एक फ्रावार्डिन को मनाया गया।

9.3 फसली कैलेंडर

20वीं सदी की शुरुआत में मुम्बई (तत्कालीन बोम्बे) के पारसी गणितज्ञ खुर्शेदजी कामा ने 'जरथूस्त्र फासिली साल मंडल' या पारसी सीजनल-ईयर सोसाइटी की स्थापना की। 1906 मे सोसायटी ने एक पारसी कैलेण्डर का प्रस्ताव समाज के सामने प्रस्तुत किया। इस कैलेण्डर को ऋतुओं के अनुसार महीनों में विभाजित किया गया था। इस कैलेण्डर का मूल स्वरूप सासानिद शासक मलिक शाह के शासनकाल के दौरान 1079 में शुरू किए गए जलाली कैलेण्डर के अनुसार था। सासानिद कैलेण्डर कृषकों के लिए बिल्कुल सही मौसम की गणना पेश करता था।

फसली कैलेण्डर के प्रस्ताव में दो विशिष्ट विशेषताएं रखी गई। इनमें पहली है - प्रत्येक चौथे वर्ष एक बार अधिक दिवस जोड़ा जाता है और उष्णकटिबंधीय वर्ष के साथ सामंजस्य बिठाया जाता है। अधिक दिवसको अवर्दाद-साल-गाह कहा गया। साथ ही वर्ष के अंत में पांच गाथा दिनों को आवश्यकता अनुसार तय करने की छूट दी गई। नववर्ष का पहला दिन उत्तर वसंत विषुव पर तय किया गया। पारसी समाज ने दावा किया कि उनका कैलेण्डर एक सही धार्मिक कैलेण्डर है।

नए कैलेंडर को भारतीय पारसी समुदाय से बहुत कम समर्थन मिला, क्योंकि इसे देंकार्ड में व्यक्त निषेधाज्ञा के विपरीत माना जाता था। हालांकि, ईरान में फसली कैलेण्डर को 1930 में

स्वीकार किया गया। इसे ईरानी पारसी लोगों ने बस्तानी कैलेण्डर स्वीकार किया। ईस्वी 1925 में ईरानी संसद ने एक नया ईरानी कैलेण्डर पेश किया था, जिसमें (फसली आंदोलन से स्वतंत्र) फसली सोसाइटी द्वारा प्रस्तावित दोनों बिंदुओं को शामिल किया गया था। ईरानी राष्ट्रीय कैलेण्डर ने महीनों के पारसी नामों को भी बरकरार रखा।

चूंकि प्रत्येक ग्रेगोरियन वर्ष के लिए ठीक एक फसली वर्ष होता है, तो प्रोलेप्टिक फसली कैलेण्डर का पहला दिन 21 मार्च (ग्रेगोरियन) 631 इस्वी होगा। लेकिन यजीद तृतीय 19 जून 632 इस्वी (ग्रेगोरियन) को शासनारूढ़ हुआ था। इसलिए प्रोलेप्टिक फसली कैलेण्डर का पहला दिन 21 मार्च (ग्रेगोरियन) 632 इस्वी स्वीकार किया गया। पारसी वर्ष में एपेजमोनाई और गहनबार उत्सव के दौरान दिवंगत आत्मा की याद में दस दिन और वर्ष के अंत में पांच गाथा दिन भी मनाते हैं। इसी के साथ बारहवें महीने का अंतिम दिन मारेशपंड उत्सव होता है। फसली पालन के एक सामान्य वर्ष (गैर-लीप वर्ष) में, मुक्ताद को 11-20 मार्च को मनाया जाता है, जिसमें हमसपथमैद्यम और गाथा दिन 16-20 मार्च होते हैं। 14 मार्च को मारेशपंड उत्सव होता है। फसली पालन के एक लीप वर्ष में, मुक्ताद 10-19 मार्च को मनाया जाता है, जिसमें हमसपथमैद्यम और गाथा दिन 15-19 मार्च होते हैं। 13 मार्च को मारेशपंड उत्सव होता है। लीप दिवस20 मार्च को अवर्दाद-साल-गह कहा जाता है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ संबंध

फसली गणना के अनुसार 21 मार्च 2000 को नौरोज था और 1370 यज्द (3738 जेर) का पहला दिन था। डॉ. अली जाफरी ने फसली कैलेण्डर को एक उष्णकटिबंधीय कैलेण्डर बताया है। इसे अधिक वर्ष देखकर ठीक किया जाता है। वेबस्टर का ऑनलाइन शब्दकोश और विभिन्न गैर-संदर्भित स्रोत बताते हैं कि फसली कैलेंडर ग्रिगोरियन का अनुसरण करता हैऔर यह आरई कडवा द्वारा प्रकाशित तालिकाओं में 2009-2031 की अवधि में ग्रेगोरियन कैलेंडर का सख्ती से पालन करते हुए दिखाया गया है।

ईरानी कैलेंडर के साथ संबंध

ईरान में फसली कैलेण्डर 31 मार्च 1925 ईस्वी में स्वीकार किया गया। यह कैलेण्डर उत्तरी वंसत विषुव से स्थिर होता है। ईरानी दिवस की शुरुआत मध्यरात्रि से मानी जाती है। ईरानी समय ग्रीनविच मीन टाइम से 3.5 घंटे आगे है। नए साल के दिन को उस दिन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जैसा कि ईरानी समय के अनुसार, उत्तर की ओर विषुव (समय में सटीक क्षण जब पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध पृथ्वी की कक्षा के बिंदु से गुजरते हैं जब वे सूर्य द्वारा समान रूप से प्रकाशित होते हैं)। उस दिन की दोपहर को या उससे पहले या पिछले दिन की दोपहर के बाद के 12 घंटों के दौरान होता है। इसका अर्थ यह है कि ईरानी कैलेण्डर में अधिक वर्ष की गणना की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। आमतौर पर प्रत्येक चौथे वर्ष अधिक वर्ष होता है लेकिन आठवां अधिक वर्ष पांचवें वर्ष में माना जाता है। इस प्रकार प्रत्येक 32 साल बाद अधिक वर्ष में एक वर्ष आगे कर दिया जाता है।

खगोलीय रहस्यमय पहलू

तीन अलग-अलग पारसी कैलेण्डर की परंपराएं महीनों की शुरुआत के सिद्धांत के संबंध में समान हैं। वे संरचनात्मक रूप से आर्मेनियाई कैलेंडर और माया कैलेण्डर के समान हैं, लेकिन

ईरान के जलाली कैलेण्डर, जूलियन कैलेण्डर और फ्रांसीसी क्रांतिकारी कैलेण्डर से अलग हैं, जिनके महीने पश्चिम ज्योतिष गणना के अनुसार युग विषुव संक्रांति के अनुरूप तय किए गए हैं। कादिमी और शाहनुशाही पारसी कैलेण्डर केवल पांच युगांतरकारी दिनों का उपयोग करते हैं, जो कि फ्रांसीसी क्रांतिकारी और कॉप्टिक कैलेंडर में भी उपयोग में आते हैं। हालांकि इन अंतिम दो में हर लीप वर्ष में छठा एपेजमोनल दिन होता है, इसलिए उनकी वर्ष गणना धीरे-धीरे उष्णकटिबंधीय वर्ष के माध्यम से चलती है। मान्यता है कि महीनों का नामकरण पारसी कैलेंडर की उत्पत्ति के समय से ही समान है और इनका नामकरण स्वयं जरथ्रुस्त्र ने किया था।

फसली कैलेण्डर भारत के बाहर, विशेष रूप से पश्चिम में बहुत लोकप्रिय हो गया है, लेकिन कई पारसी मानते हैं कि एक अधिक दिवस जोड़ना नियमों के विरुद्ध है, और वे ज्यादातर शहनानुशाही कैलेण्डर का उपयोग करना जारी रखते हैं। अधिक माह को बहाल करके मामलों को ठीक करने का प्रस्ताव है, लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता, शहनानुशाही और कदीमी वर्ष पहले और पहले शुरू होते रहेंगे। अपरिवर्तित कदीमी कैलेंडर अंततः ग्रिगोरियन वर्ष 2508 में फसली कैलेंडर के साथ मेल खाएगा। 21 मार्च को शहनानुशाही नया साल ईस्वी 2632 में हो पाएगा।

1992 में, तीनों कैलेण्डर में एक ही दिन एक महीने का पहला दिन होता था। कई पारसी लोगों ने कैलेण्डर के समेकन का सुझाव दिया लेकिन इस पर सहमति नहीं बन सकी। हालांकि कुछ ने इस अवसर को फसली कैलेण्डर का स्वीकार करने का अवसर माना और वे उसका अनुगमन करने लगे। इस पर उनके पुरोहितों (खुदाईजी) ने आपत्ति जताई। उनका कहना था कि अगर ऐसा किया जाता है तो इसके लिए संवत अभिषेक की आवश्यकता होगी। यह अत्यंत खर्चीली विधि है, सामान्य पूजा के द्वारा यह नहीं किया जा सकता। यह भी प्रस्तावित किया गया है कि शहनानुशाही कैलेण्डर को पूर्ण विधि से स्वीकार कर लिया जाये।

वर्तमान स्थिति यह है कि ब्रिटेन, भारत में पारसी समुदाय शहनानुशाही कैलेण्डर का पालन करते हैं। वहीं, ईरानी पारसी ज्यादातर फसली कैलेंडर का पालन करते हैं, यूरोप के पारसी ट्रस्ट फंड दोनों कैलेंडर का पालन करते हैं।

9.4 पारसी कैलेण्डर में महीनों और दिनों का नामकरण

पारसी अभ्यास समय को वर्षों (साल या सोल), महीनों (माह), सप्ताह, दिनों (रूज, रोज, या रोज) और घड़ियों (गाह या गेह) में विभाजित करता है। एक दिन को सूर्योदय से शुरू माना जाता है। सूर्योदय से पहले के घंटे पिछले कैलेंडर दिन में माने जाते हैं। प्रत्येक दिन को पांच घड़ियों में बांटा गया है-

i. हवन (सूर्योदय से दोपहर)

ii. रैपिथविन या दूसरा हवन (दोपहर से 3 बजे तक)

iii. उजेरिन (शाम 3 बजे से सूर्यास्त तक)

iv. ऐविसुथ्रेम (सूर्यास्त से मध्यरात्रि तक)

v. उषाहिन (मध्यरात्रि से सूर्योदय तक)

मध्यकाल में, बुंदाहिशन ने पूरे दिन को पांच भागो में बांटा। उसके अनुसार, सर्दियों में केवल चार अवधि होती थी, जिसमें हवन भोर से उजिरन तक होता था, जिसमें रैपिथवान को छोड़ दिया जाता था। पारसी कैलेण्डर में महीने के दिन और दिन एक देवत्व या दैवीय अवधारणा को समर्पित और उसके नाम पर रखे गए हैं। कैलेंडर समर्पण का धार्मिक महत्व बहुत महत्वपूर्ण है। कैलेंडर न केवल प्रमुख देवताओं के पदानुक्रम को स्थापित करता है, यह उनके नामों का बार-बार आह्वान सुनिश्चित करता है क्योंकि पूजा के प्रत्येक पारसी अधिनियम में दिन और महीने दोनों के देवताओं का उल्लेख किया गया है।

दिनों के नाम

देवताओं के बाद के दिनों और महीनों के नामकरण की परंपरा एक समान मिस्र के रिवाज पर आधारित थी, और उस तारीख से जब कैलेंडर स्थापित किया गया था। पुराने फारसी महीने-नामों के साथ उपयोग के लिए अंतिम साक्ष्य 458 ईसा पूर्व से आता है। इस अवधि से कोई दिनांकित पश्चिम-ईरानी दस्तावेज मिलता नहीं है। इस समय पारसी कैलेण्डर बनाया गया था, जो कई दूर-दराज की भूमि में इसके उपयोग से अनुमान लगाया जा सकता है जो पहले एकेमेनिड साम्राज्य का हिस्सा था।

दिन समर्पण का प्रमाण पुराने समय से ही मिलता है। इसे यसना कहा गया है। यसना या दिन-नाम समर्पण के लिए 30 देवताओं के लिए एक दिन निर्धारित किया जाता है। यह निर्धारण सिरोज कहलाता है। इसमें 30 देवताओं को अलग-अलग समर्पण के साथ एक दो भाग अवेस्ता से आते हैं।

1. ददवा अहुरा मज्दा
2. वोहु मनः
3. आ वहिस्ता
4. क्षत्र वैर्य
5. स्पेंटा एर्मैती
6. हौरवतात
7. अमरेतत
8. ददवा अहुरा मज्दा
9. अतर
10. चव
11. ळवार
12. माह,
13. तिस्त्र्या
14. गेउ उर्वन
15. ददवाह अहुरा मज्दा
16. मिथरा

17. स्रोआ
18. श्रानु
19. फ्रवण्यि
20. वीरथ्रगना
21. रमन
22. वात
23. ददवाह अहुरा मज्दा
24. दाना
25. आशी
26. अर्शत
27. अस्मान
28. जम
29. मंथरा स्पेंटा
30. अनाघरा रावचा

इस कैलेण्डर में चार तिथियों का समर्पण अहुरा मज्दा के लिए है – पहली, 8वीं, 15वीं और 23वीं तारीख को ददवाह अहुरा मज्दा दिन स्वीकार किया गया। दूसरे से से सातवां दिन अमेशा स्पेंटस को समर्पित हैं। अमेशा स्पेंटस छह दिव्य चिंगारी हैं, जिनके माध्यम से बाद की सभी सृष्टि को पूरा किया गया थाऔर जो वर्तमान पारसी धर्म में महादूत हैं।

दिन 9 से 13 लिटानियों (नियायेश) के पांच यजतों के लिए समर्पण हैं- अग्नि (अतर), जल (अपो), सूर्य (हवार), चंद्रमा (मह), तारा सीरियस (तिस्त्र्या) जो यहां शायद अपने में आकाश का प्रतिनिधित्व करता है। 14वां दिन बैल की आत्मा (ग्यूश उर्वन) को समर्पित है, जो सभी जानवरों की सृष्टि से जुड़ा हुआ है और उसका प्रतिनिधित्व करता है।

16वां दिन मिथ्रा, महीने के दिनों के दूसरे भाग का नेतृत्व करते हुए, शपथ की दिव्यता को समर्पित है। यह उनके बाद उनके सबसे करीबी सरोआ और रावण है, जो आत्मा के न्यायाधीश हैं। जिसके प्रतिनिधि, फ्रावाशी (ओं) आगे आते हैं। वीरथ्रगना, रमन, वात क्रमशः जीत की शुरुआत, जीवन की सांस, हवा की दिव्यता और 'अंतरिक्ष' का अभिव्यंजना है।

अंतिम समूह अधिक अमूर्त उत्सर्जन का प्रतिनिधित्व करता है- धर्म (दाना), प्रतिपूर्ति (आशी) और न्याय (अर्शत), आकाश (असमान) और पृथ्वी (जम), पवित्र आह्वान (मंथरा स्पेंटा) और अंतहीन प्रकाश (अनाघरा रावचा)।

महीने के नाम

बारह देवियां जिनके नामों पर महीनों के दिन समर्पित हैं, उनके लिए महीने भी समर्पित किये गये हैं। महीने के नाम (कोष्ठक में अवेस्तान भाषा के नामों के साथ), आज इस्तेमाल किए जाने वाले क्रमिक क्रम में हैं-

1. फरवार्डिन (फ्रौउआसिनम)

2. अर्दीबेश्त (आहे वाहिस्तहे)
3. खोरदाद (हौरवताती)
4. तीर (तिस्त्रीहे)
5. अमरदाद (अमृतति)
6. शहरेवर (क्षराहे वैरियेहे)
7. मेहर (मीराहे)
8. अबान (अपीम)
9. अजार (आरो)
10. डीएई (दाउ अहुराहे मज्दी)
11. बहमन (व हस मन हो)
12. असफंद या असफंदियर (मातोइस)

जिन जिन दिनों में दिन-नाम और महीने-नाम का समर्पण समान होता है, वे विशेष पूजा के दिन (दावत के दिन) होते हैं। क्योंकि अहुरा मज्दा में चार दिन-नाम समर्पण हैं, उसे समर्पित महीने में चार चौराहे हैं (दसवें महीने का पहला, आठवां, 15वां और 23वां दिन)। अन्य में एक-एक चौराहा है। उदाहरण के लिए, पहले महीने का 19वां दिन फ्रावाशियों की विशेष पूजा का दिन है।

9.5 अभ्यास/बोध प्रश्न

रिक्त स्थान पूर्ति-

1) आरियान के लोग ----और ----के उपासक थे।
2) इरान का प्रचीन नाम .....था।
3) पारसी धर्म के प्रवर्तक .....थे।
4) भारत में पारसी समुदाय....पञ्चांग का पालन करते हैं।
5) पारसी भाषा लगभग.....जैसी है।

अतिलघूत्तरीय प्रश्न-

6) इरान किससाम्राज्य का हिस्सा था?
7) फारस देश का नामकरण किस आधार पर हुआ?
8) पारसियों केप्रमुखदार्शनिक कौन थे?
9) फसली पंचांग का विकास किसके द्वारा हुआ?
10) अवेस्तान पंचांग के विषय में बताइए।
11) बेबीलोनियन पंचांग किस सिद्धांत पर आधारित था?
12) 'नवरोज उत्सव' क्या है?

13) फसली पंचांग में अधिक दिवस को क्या कहा गया?

14) पारसी पंचांग में 1 दिन को कितनी घड़ियों में बांटा गया है।

9.6 सारांश

हमने इस अध्याय में अध्ययन किया कि फारसी और फसली कैलेण्डर का विकास और उनका उपयोग कैसे हुआ और कैसे हो रहा है। इसमें यह भी स्पष्ट है कि दोनों प्रकार के कैलेण्डर फारसियों ने ही विकसित किया। यह सौर-चांद्र गणना और उत्तर वसंत विषुव पर आधारित वैज्ञानिक रीति से बने कैलेण्डर है। इनके दिन और महीने भी सौर और ग्रह गणना से मिलते हैं।

9.7 शब्दावली

आरियाना - वर्तमान ईरान

अकेमेनिड साम्राज्य - सबसे पहले फारसी साम्राज्य , एक प्राचीन ईरानी साम्राज्य था, पश्चिमी एशिया में स्थित है और साइरस द ग्रेट द्वारा स्थापित किया गया है।

कदीमी - प्राचीन

नवरोज - नववर्ष का आरम्भ

एपेजमोनाई - नौवें महीने का उत्सव

गहनबार - खेती के उत्सव

फ्रावर्डिन महीना - पहला महीना

बस्तानी - पारंपरिक

9.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ई. जी. रिचर्ड्स, *मैपिंग टाइम : द कैलेंडर एंड इट्स हिस्ट्री*, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1999

2. माइकल जज .*द डान्स ऑफ टाइम द ओरिजिन्स ऑफ द :कैलेंडर*. न्यू यार्कऑर्केड : पब्लिकेशन, .2004

3. एरिक हार्नंग, रॉफ क्रॉस, डेविड वारबर्टन, एनशिएंट इजिप्शियन क्रोनोलॉजी, ब्रिल, लीडेन, 2006

4. एच ई विनलॉक, द ओरिजिन ऑफ द एनशिएंट इजिप्शियन कैलेंडर, प्रोसिडिंग्स ऑफ द अमेरिकन फिलॉसोफिकल सोसाइटी, वॉल्युम 83, नंबर 3, सितंबर, 1940

5. एनाटोली टी फोमेंको, टेटियाना एन फोमेंको, वीस्लॉ जेड क्रावसेविक, ग्लेब वी नोसोव्किज, मिस्ट्रीज ऑफ इजिप्शियन जोडिएक्स एंड अदर रिडल्स ऑफ एनशिएंट हिस्ट्री, न्यू क्रोनोलॉजी प्रकाशन, 2004

6. सांचा स्टर्न, कैलेंडर्स इन एंटीक्विटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012

उत्तरमाला

1) सूर्य, अग्नि
2) आरियाना
3) जरथ्रुस्त
4) शहनानुशाही
5) संस्कृत
6) ओरोमन साम्राज्य का
7) पारसी नामक मतानुयायियों के नाम पर फारस नामकरण हुआ
8) जरथ्रुस्त
9) पारसियों द्वारा
10) जेंदा अवस्ता के नाम पर अवेस्तान पंचांगनाम पड़ा, यह सबसे पुराना फारसी पंचांग है।
11) चांद्र-सौर गणना पर
12) नववर्षका प्रारम्भ ही नवरोज उत्सव है। जिसे वर्तनान में पारसी सम्राट के जन्मदिन या खोरदाद वर्ष के रूप में मानाजाता है।
13) अधिक दिवसको अवर्दाद-साल-गाह कहा गया।
14) पाँच घड़ियों में